

डॉ. रॉबर्ट पीटरसन, धर्मशास्त्र, सत्र 5, ट्रिनिटी, ऑगस्टीन और कॉन्स्टेंटिनोपल की परिषद। ईश्वर एक है

© 2024 रॉबर्ट पीटरसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन और धर्मशास्त्र उचित या ईश्वर पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 5 है, ट्रिनिटी, ऑगस्टीन और कॉन्स्टेंटिनोपल की परिषद। ईश्वर एक है।

ईश्वर के सिद्धांत या धर्मशास्त्र पर हमारे व्याख्यान में आपका स्वागत है। आइए हम कुछ भी करने से पहले प्रार्थना करें। दयालु पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा, हम आपके सामने झुकते हैं।

हम स्वीकार करते हैं कि केवल आप ही ईश्वर हैं। हम आपकी रचना के रूप में अपना स्थान पाकर प्रसन्न हैं। हम अपने पापों को स्वीकार करते हैं।

हम अपने उद्धारक मसीह और पवित्र आत्मा की महिमा करते हैं जिन्होंने हमारे दिलों को सुसमाचार के लिए खोल दिया। हमें आशीर्वाद दें और अपने नाम को सम्मान दिलाएँ। इन व्याख्यानों के माध्यम से हम प्रार्थना करते हैं।

यीशु के नाम में, आमीन। मैंने कल दो बार सिबेलियस का नाम लिया। मुझे कुछ देर के लिए रुकावट महसूस हुई।

और कुछ गलत कहने के बजाय, मैंने कुछ भी नहीं कहा। मुझे लगा कि सुनने वालों को स्पष्टीकरण की ज़रूरत होगी। और वाकई, शायद आपको भी इसकी ज़रूरत है।

जैसा कि पता चला है, और जैसा कि मुझे अब याद है कि सिबेलियस मोडलिस्टिक राजतंत्रवाद या मोडलिज्म के प्रमुख प्रतिनिधियों में से एक है, जो, जैसा कि आपको याद है, ईश्वर की एकता पर जोर देने का एक प्रयास है जो यह कहकर झूठी शिक्षा में समाप्त हो गया कि, हाँ, एक पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा है, लेकिन वे एक साथ मौजूद नहीं हैं, बल्कि इतिहास के माध्यम से क्रमिक रूप से मौजूद हैं। एक ईश्वर अब पुराने नियम के समय में, सुसमाचारों में, यीशु के सांसारिक जीवन में पिता के रूप में प्रकट होता है। वह अब पिता के रूप में नहीं, बल्कि पुत्र के रूप में प्रकट होता है।

यही मेरा क्रमिक से मतलब है। पितृकुस्त के बाद, एक ईश्वर केवल पवित्र आत्मा के रूप में प्रकट होता है। यह एक झूठी शिक्षा है क्योंकि वास्तव में एक ईश्वर है और तीन ऐसे हैं जो ईश्वर हैं, लेकिन ये तीनों एक साथ ईश्वर हैं।

सिबेलियस एक बहुत प्रसिद्ध मोडलिस्ट है। वास्तव में, इतना प्रसिद्ध कि मोडलिज्म का दूसरा नाम सिबेलियनवाद है। हम अपना सर्वेक्षण, अपना ऐतिहासिक सर्वेक्षण, यदि आप चाहें तो,

ट्रिनिटी के सिद्धांत का समापन कर रहे हैं, और हम पश्चिम के मुकुट तक पहुँच चुके हैं, जो कि सेंट ऑगस्टीन है।

जबकि ऑगस्टीन की त्रित्ववादी रूढ़िवादिता की व्याख्या पूरी तरह से धर्मग्रंथों पर आधारित है, ईश्वर की उनकी अवधारणा एक निरपेक्ष सत्ता, सरल और अविभाज्य, श्रेणियों से परे, इसकी हमेशा मौजूद पृष्ठभूमि बनाती है। इसलिए, उस परंपरा के विपरीत जिसने पिता को अपना प्रारंभिक बिंदु बनाया, यानी पूर्वी परंपरा, वह स्वयं ईश्वरीय प्रकृति से शुरू करता है। यह सरल अपरिवर्तनीय प्रकृति या सार है जिसे वह सार को पदार्थ से अधिक पसंद करता है, क्योंकि उत्तरार्द्ध गुणों वाले विषय का सुझाव देता है, जबकि ऑगस्टीन के लिए ईश्वर अपने गुणों के साथ समान है, जो कि त्रित्व है।

यह सरल, अपरिवर्तनीय प्रकृति या सार ही त्रित्व है। इस प्रकार त्रित्व की एकता को पूरी तरह से सामने रखा गया है, हर तरह के अधीनतावाद को सख्ती से बाहर रखा गया है, ऑगस्टीन ने पुष्टि की, जहाँ ईश्वर के बारे में जो कुछ भी पुष्टि की जाती है, वह तीनों व्यक्तियों में से प्रत्येक के लिए समान रूप से पुष्टि की जाती है क्योंकि यह एक ही पदार्थ है जो उनमें से प्रत्येक का गठन करता है। न केवल पिता ईश्वरत्व के संबंध में पुत्र से बड़ा नहीं है, बल्कि पिता और पुत्र एक साथ पवित्र आत्मा से बड़े नहीं हैं, और तीनों में से कोई भी व्यक्ति त्रित्व से कम नहीं है।

यह एक व्यक्ति, तीन व्यक्तियों में एक ईश्वर और तीन समान व्यक्तियों से मिलकर एक ईश्वर बनने का सच्चा सिद्धांत है। ईश्वरीय प्रकृति की एकता पर इस जोर से कई निष्कर्ष निकलते हैं। सबसे पहले, पिता, पुत्र और आत्मा तीन अलग-अलग व्यक्ति नहीं हैं, ठीक उसी तरह जैसे तीन मनुष्य जो एक ही वंश, मानव जाति से संबंधित हैं।

बल्कि, प्रत्येक दिव्य व्यक्ति, पदार्थ के दृष्टिकोण से, दूसरों के साथ या स्वयं दिव्य पदार्थ के साथ एक समान है। इस तरह, ईश्वर का वर्णन सही ढंग से नहीं किया गया है जैसा कि विक्टोरिनस ने उसे तीन गुना, ट्रिपलक्स के रूप में वर्णित किया था, एक शब्द जो ऑगस्टीन को तीन व्यक्तियों के संयोजन का सुझाव देता था, लेकिन एक त्रिमूर्ति के रूप में, और व्यक्तियों को अलग-अलग रूप से एक दूसरे के साथ रहने या सह-अस्तित्व में कहा जा सकता है। दूसरे, जो कुछ भी दिव्य प्रकृति से संबंधित है, उसे भाषा की कठोरता में, एकवचन में व्यक्त किया जाना चाहिए क्योंकि वह प्रकृति अद्वितीय है।

जैसा कि बाद के अथानासियन पंथ में कहा गया है, जो पूरी तरह से ऑगस्टिनियन है, जबकि प्रत्येक व्यक्ति अनिर्मित, अनिर्मित, अनंत, सर्वशक्तिमान, शाश्वत आदि है, लेकिन तीन अनिर्मित, अनंत, सर्वशक्तिमान, शाश्वत आदि नहीं हैं, बल्कि एक हैं। तीसरा, त्रिदेव के पास एक अविभाज्य क्रिया और एक इच्छा है। इसका संचालन अविभाज्य है।

आकस्मिक व्यवस्था के संबंध में, तीनों व्यक्ति एक सिद्धांत के रूप में कार्य करते हैं, और चूंकि वे अविभाज्य हैं, इसलिए वे अविभाज्य रूप से कार्य करते हैं। यह एक प्रतिभाशाली व्यक्ति की अद्भुत रूढ़िवादिता है जो भगवान से प्रेम करता था। उनके अपने शब्दों में, जहाँ स्वभाव में कोई अंतर नहीं है, वहाँ इच्छाशक्ति में भी कोई अंतर नहीं है।

इसका उदाहरण देते हुए, ऑगस्टीन ने तर्क दिया कि पुराने नियम में दर्ज ईश्वरीय दर्शन को, जैसा कि पहले की पितृसत्तात्मक परंपरा में माना जाता था, केवल पुत्र के प्रकटन के रूप में नहीं माना जाना चाहिए। कभी-कभी उन्हें पुत्र या आत्मा, कभी-कभी पिता और कभी-कभी तीनों के लिए जिम्मेदार ठहराया जा सकता है। कभी-कभी, यह तय करना असंभव होता है कि उन्हें तीनों में से किसके लिए वर्णित किया जाए।

अंत में, ऑगस्टीन को उस स्पष्ट कठिनाई का सामना करना पड़ता है जो उनके सिद्धांत से पता चलता है: ऐसा लगता है कि यह तीन व्यक्तियों की कई भूमिकाओं को मिटा देता है। उनका जवाब है कि जबकि यह सच है कि पिता से अलग पुत्र का जन्म हुआ, उसने दुख झेला और फिर से जी उठा, यह भी उतना ही सच है कि पिता ने अवतार, पीड़ा और पुनरुत्थान लाने में पुत्र के साथ सहयोग किया।

पुत्र का प्रकट होना और दृश्यमान होना उचित था। दूसरे शब्दों में, चूंकि प्रत्येक व्यक्ति में एक विशेष तरीके से दिव्य प्रकृति होती है, इसलिए ईश्वरत्व के बाहरी संचालन में उनमें से प्रत्येक को वह भूमिका देना उचित है जो उसके मूल के आधार पर उसके लिए उपयुक्त हो। यह एक ऐसा मामला है जिसे बाद के पश्चिमी धर्मशास्त्रियों ने विनियोग के रूप में वर्णित किया।

यह हमें व्यक्तियों के भेद की ओर ले जाता है, जिसे ऑगस्टीन ईश्वरत्व के भीतर उनके आपसी संबंधों में निहित मानते हैं। जबकि वे समान हैं और उन्हें एक दिव्य पदार्थ के रूप में माना जाता है, पिता को पिता के रूप में प्रतिष्ठित किया जाता है क्योंकि वह पुत्र को जन्म देता है, और पुत्र को पुत्र के रूप में प्रतिष्ठित किया जाता है क्योंकि वह जन्मा है। इसी तरह, आत्मा को पिता और पुत्र से अलग किया जाता है क्योंकि वे उन्हें प्रदान करते हैं।

वह उनका साझा उपहार है, जो पिता और पुत्र के बीच एक तरह का मिलन है, या फिर वह प्रेम है जो वे मिलकर हमारे दिलों में भरते हैं। वह वह प्रेम है। फिर सवाल उठता है कि वास्तव में वे तीनों क्या हैं।

ऑगस्टीन मानते हैं कि वे पारंपरिक रूप से नामित व्यक्ति हैं, लेकिन वे इस शब्द से स्पष्ट रूप से नाखुश हैं। संभवतः इसने उन्हें अलग-अलग व्यक्तियों का सुझाव दिया। यदि अंत में वे वर्तमान प्रयोग को अपनाने के लिए सहमत होते हैं, तो यह तीनों के बीच अंतर को मोडलिज्म के विरुद्ध पुष्टि करने की आवश्यकता के कारण है।

उन्होंने कहा कि तीन व्यक्तियों को नियुक्त करने का सूत्र इसलिए नहीं था कि ऐसा कहा जा सके, बल्कि इसलिए था कि कुछ भी न कहने की नौबत न आए। और मानवीय भाषा की अपर्याप्तता की गहरी समझ के साथ। उनका अपना सकारात्मक सिद्धांत मूल था, और पश्चिमी त्रित्ववाद के इतिहास के लिए, एक अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्धांत था, कि तीनों वास्तविक या अस्तित्वगत संबंध हैं।

इसे तैयार करने में उनका उद्देश्य आर्य आलोचकों द्वारा प्रस्तुत की गई चालाक दुविधा से बचना था। खुद को अरस्तू की श्रेणियों की योजना पर आधारित करते हुए, उन्होंने तर्क दिया कि ईश्वरत्व

के भीतर भेद, ईश्वरत्व के भीतर भेद यदि वे मौजूद हैं, तो उन्हें पदार्थ या दुर्घटना की श्रेणी में वर्गीकृत किया जाना चाहिए। उत्तरार्द्ध सवाल से बाहर था, क्योंकि ईश्वर में कोई दुर्घटना नहीं है।

पहले वाले ने इस निष्कर्ष पर पहुंचाया कि तीनों स्वतंत्र पदार्थ हैं। मुझे स्पष्ट करना चाहिए, महान विचारक अरस्तू के लिए, जिन्होंने विशेष रूप से थॉमस एक्विनास के माध्यम से अपने दो सप्ताह के पुरस्कार, मध्यकालीन पश्चिमी धर्मशास्त्र को प्रभावित किया, पदार्थ और दुर्घटनाओं के बीच अंतर किया। इस पुलपिट का पदार्थ इसका सार है।

यह पुलपिट पदार्थ, पुलपिट सार का हिस्सा है, जो एक पुलपिट को पुलपिट बनाता है। इस पुलपिट की दुर्घटनाएँ इसका सटीक आकार, इसका रंग, इसका वजन, इत्यादि हैं, है न? लेकिन एक मछली पुलपिट सार का हिस्सा नहीं बनती है, है न? यहाँ तक कि एक कुर्सी भी नहीं बनती है, और हम वास्तव में बहस कर सकते हैं कि वास्तव में क्या बनता है, लेकिन आप समझते हैं कि सार या पदार्थ वह है जो किसी चीज़ के लिए आवश्यक है, और दुर्घटनाएँ आवश्यक नहीं हैं। वे विशेषताएँ हैं जो उस सार या पदार्थ को योग्य बनाती हैं।

हाँ, हम मास की रोमन कैथोलिक समझ की पृष्ठभूमि के बारे में बात कर रहे हैं, जो एक ट्रांस-सब्सटैंटिएशन है, यानी, रोटी और शराब के सार में बदलाव, ताकि वे आध्यात्मिक रूप से मसीह के शरीर और रक्त बन जाएँ। दुर्घटनाएँ, हमारी आँखों के सामने रोटी और शराब, और जिसे हम छूते और पीते हैं, नहीं बदलती हैं, लेकिन चमत्कारिक रूप से और अदृश्य रूप से, सार बदल जाता है, पदार्थ, ऐसा कहें तो। यह रोमन कैथोलिक सिद्धांत है, जिसका मैं समर्थन नहीं करता, लेकिन मैं सार या पदार्थ और दुर्घटनाओं के बीच अरस्तू के भेद को समझा रहा हूँ।

विली-आर्यन ने सोचा कि इस मामले में उन्होंने रूढ़िवादी लोगों को अपने वश में कर लिया है। अगर व्यक्ति, अगर पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा मौजूद हैं, तो वे या तो पदार्थ होंगे या दुर्घटनाएँ। बस यही है।

दुर्घटनाएँ नहीं हो सकतीं। भगवान के साथ कोई दुर्घटना नहीं होती। वह भगवान हैं।

यदि आप कहते हैं कि वे पदार्थ हैं, तो यह इस निष्कर्ष पर पहुंचता है कि तीन स्वतंत्र पदार्थ हैं, जो आर्यों को त्रिदेववाद, बहुदेववाद और अनेक देवताओं की तरह लगते हैं। ऑगस्टीन दोनों स्वायत्तवादियों को खारिज करते हैं, यह इंगित करते हुए कि संबंध की अवधारणा अभी भी बनी हुई है। वे दावा करते हैं कि तीनों संबंध उतने ही वास्तविक और शाश्वत हैं जितने कि जन्म देने, जन्म लेने और आगे बढ़ने या ईश्वर के भीतर दिए जाने के कारक, जिसने उन्हें जन्म दिया, जो उन्हें जन्म देते हैं।

इस प्रकार पिता, पुत्र और आत्मा इस अर्थ में सम्बन्ध हैं कि उनमें से प्रत्येक जो भी है, वह एक या दोनों से सम्बन्ध रखता है। उनमें से कोई भी अलग व्यक्ति नहीं है। वे ईश्वरत्व की त्रि-एकता का हिस्सा हैं।

आधुनिक लोगों के लिए, जब तक कि वे तकनीकी दर्शन में प्रशिक्षित न हों, संबंधों की धारणा, ऊपर, दाईं ओर, से अधिक, आदि, वास्तविक पदार्थ के रूप में अजीब लगती है, हालांकि वे आमतौर पर उनकी वस्तुनिष्ठता पर विचार करने के लिए तैयार रहते हैं, अर्थात्, वे पर्यवेक्षक से स्वतंत्र अपने अधिकार में मौजूद हैं। ऑगस्टीन के लिए, यह अधिक परिचित था, क्योंकि प्लोटिनस और पोर्फिरी दोनों ने इसे पढ़ाया था। उनके दृष्टिकोण से सिद्धांत का लाभ यह था कि उन्हें एक नए भाषा स्तर पर ईश्वर के बारे में सार्थक रूप से बात करने में सक्षम बनाकर, इसने विरोधाभास में पड़े बिना देवता की एकता और बहुलता की पुष्टि करना संभव बना दिया।

तीसरा, ऑगस्टीन हमेशा यह समझाने में उलझन में रहते थे कि आत्मा का क्रम क्या है या यह पुत्र की पीढ़ी से किस तरह अलग है। हालाँकि, उन्हें यकीन था कि आत्मा पिता और पुत्र का आपसी प्रेम है, वह अभिन्न बंधन जो उन्हें एकजुट करता है। इसलिए, उनकी लगातार शिक्षा यह थी कि वे दोनों की आत्मा हैं, जैसा कि उन्होंने कहा।

पवित्र आत्मा उनमें से किसी एक की आत्मा नहीं है, बल्कि दोनों की आत्मा है। पवित्र आत्मा नहीं है। इस प्रकार, उनका मानना था कि यह पवित्रशास्त्र का स्पष्ट उद्धार है।

इस प्रकार, पवित्र आत्मा के संबंध में, पिता और पुत्र एक ही सिद्धांत बनाते हैं, अनिवार्य रूप से ऐसा इसलिए है क्योंकि दोनों का उसके साथ संबंध समान है, और जहां संबंध में कोई अंतर नहीं है, उनका संचालन अविभाज्य है। इसलिए ऑगस्टीन ने, पहले के किसी भी पश्चिमी पिता की तुलना में अधिक स्पष्ट रूप से, पिता और पुत्र से आत्मा के दोहरे जुलूस के सिद्धांत को पढ़ाया, लैटिन फिलियोक, फिलियो, बेटा, क्यूए, और। महत्वपूर्ण फिलियोक खंड एक ऐसी चीज थी जो पूर्व को पश्चिम से अलग करती थी।

पूर्व ने इसे अस्वीकार कर दिया। याद रखें, इसमें शुरुआती बिंदु पर जोर दिया गया है और पिता को ईश्वर के रूप में महत्व दिया गया है। मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि पूर्वी या पश्चिमी पिता अपरंपरागत हैं।

मैं कह रहा हूँ कि उन्होंने इसे अलग तरीके से किया। इस आपत्ति का उत्तर देते हुए कि चूंकि पुत्र और आत्मा दोनों ही पिता से निकले हैं, इसलिए दो पुत्र होने चाहिए, उन्होंने कहा, पुत्र पिता से है, आत्मा भी पिता से है, लेकिन पहला जन्मा है, दूसरा आगे बढ़ता है। इसलिए पहला पिता का पुत्र है जिससे वह जन्मा है, लेकिन दूसरा पिता और पुत्र दोनों की आत्मा है, क्योंकि वह दोनों से आगे बढ़ता है।

पिता आत्मा की प्रक्रिया का लेखक है क्योंकि उसने ऐसे ही एक पुत्र को जन्म दिया है, और उसे जन्म देने में उसे वह स्रोत भी बनाया है जिससे आत्मा आगे बढ़ती है। मुद्दा यह है कि चूंकि पिता ने अपना सब कुछ पुत्र को दे दिया है, इसलिए उसने उसे आत्मा प्रदान करने की शक्ति दी है। वह हमें चेतावनी देते हैं कि इसका यह अर्थ नहीं निकाला जाना चाहिए कि आत्मा के दो स्रोत या सिद्धांत हैं।

इसके विपरीत, आत्मा प्रदान करने में पिता और पुत्र की क्रिया समान है, जैसा कि सृष्टि में तीनों व्यक्तियों की क्रिया है। इसके अलावा, दोहरी प्रक्रिया के बावजूद, पिता ही मूल स्रोत बना हुआ है, क्योंकि वह वही है जिससे पुत्र आत्मा प्रदान करने की अपनी क्षमता प्राप्त करता है। हम पहले, दूसरे और तीसरे व्यक्ति के बारे में बात करके उस तरह की बात को जारी रखते हैं।

हम एकता की पुष्टि करते हैं, हम समानता की पुष्टि करते हैं, लेकिन हम पिता को पवित्र त्रिमूर्ति के भीतर एक तरह की प्राथमिकता देते हैं, जैसा कि मैं कहूंगा कि शास्त्र करता है, जैसा कि हम देखेंगे। हम अंत में उस पर आते हैं जो संभवतः त्रिमूर्ति धर्मशास्त्र में ऑगस्टीन का सबसे मूल योगदान है, मानव आत्मा की संरचना से खींची गई उपमाओं का उनका उपयोग। इनका कार्य, यह ध्यान दिया जाना चाहिए, यह प्रदर्शित करना इतना नहीं है कि ईश्वर त्रिमूर्ति है।

उनके अनुसार, रहस्योद्घाटन इस बात का पर्याप्त आश्वासन देता है, ताकि तीनों के बीच पूर्ण एकता और फिर भी वास्तविक अंतर के रहस्य की हमारी समझ को गहरा किया जा सके। ऑगस्टीन के अनुसार, सख्ती से कहें तो, हर जगह त्रिदेव के अवशेष हैं, क्योंकि जहाँ तक प्राणी मौजूद हैं, वे ईश्वर के विचारों में भाग लेकर मौजूद हैं। इसलिए, हर चीज़ को, चाहे कितनी भी कम क्यों न हो, उस त्रिदेव को प्रतिबिंबित करना चाहिए जिसने इसे बनाया है।

हालाँकि, इसकी वास्तविक छवि के लिए, एक व्यक्ति को मुख्य रूप से खुद को देखना चाहिए। क्योंकि शास्त्र ईश्वर को यह कहते हुए प्रस्तुत करता है, आइए हम, अर्थात् तीन, मनुष्य को अपनी छवि और अपनी समानता में बनाएँ। यहाँ तक कि बाहरी मनुष्य, अर्थात् मनुष्य को उसकी संवेदनशील प्रकृति में माना जाता है, उसकी इंद्रियाँ हावी होती हैं, जो त्रिदेव से एक तरह की समानता प्रदान करता है।

उदाहरण के लिए, अनुभूति की प्रक्रिया तीन अलग-अलग तत्वों को जन्म देती है जो एक ही समय में निकटता से जुड़े होते हैं और जिनमें से पहला एक अर्थ में दूसरे को जन्म देता है, जबकि तीसरा अन्य दो को एक साथ बांधता है। यह बाहरी वस्तु है, मन का उसका समझदार प्रतिनिधित्व, और मन को केंद्रित करने का इरादा या कार्य। फिर, जब बाहरी वस्तु को हटा दिया जाता है, तो हमारे पास एक दूसरी त्रिमूर्ति होती है, जो बहुत बेहतर होती है क्योंकि यह पूरी तरह से मन के भीतर स्थित होती है और इसलिए, एक और एक ही पदार्थ की होती है।

वह स्मृति छाप, आंतरिक स्मृति छवि और इच्छा का इरादा या सेटिंग है। हालाँकि, त्रिदेवत्व की वास्तविक छवि के लिए, हमें आंतरिक मनुष्य या आत्मा को देखना चाहिए। और आंतरिक मनुष्य में, उसकी तर्कसंगत प्रकृति या पुरुषों में, जो उसका सबसे ऊँचा और सबसे ईश्वरीय हिस्सा है।

यह अक्सर माना जाता है कि ट्रिनिटी के बारे में डी ट्रिनिटेट में ऑगस्टीन के सिद्धांत त्रित्ववादी सादृश्य को उनके प्रेम के विचार के विश्लेषण से प्रकट किया गया है, जोहानिन के कथन में उनका प्रारंभिक बिंदु है कि ईश्वर प्रेम है, प्रेमी, प्रेम की वस्तु और वह प्रेम जो पिता, पुत्र और आत्मा को जोड़ता है, या उन्हें जोड़ने का प्रयास करता है। फिर भी, इस सादृश्य की व्याख्या करते समय, वह स्वयं मानते हैं कि यह त्रित्व की हमारी समझ की ओर केवल एक प्रारंभिक कदम है, सबसे अच्छी बात यह है कि इसकी एक क्षणिक झलक है। इस पर उनकी चर्चा काफी

संक्षिप्त है और यह उनके द्वारा अपने सबसे महत्वपूर्ण सादृश्य, आंतरिक मनुष्य पर आधारित, के लिए एक संक्रमण से अधिक कुछ नहीं है।

अर्थात्, मन की गतिविधि स्वयं पर, या इससे भी बेहतर, ईश्वर पर निर्देशित होती है। यह सादृश्य उन्हें जीवन भर आकर्षित करता रहा, इसलिए द कन्फेशंस जैसी उनकी प्रारंभिक कृति में हम उन्हें होने, जानने और इच्छा की त्रयी पर विचार करते हुए पाते हैं। डी ट्रिनिटी में, उन्होंने इसे तीन क्रमिक चरणों में विस्तार से समझाया, जिसके परिणामस्वरूप त्रिमूर्तियाँ हैं: क. मन, स्वयं के बारे में उसका ज्ञान और स्वयं से प्रेम, ख. स्मृति, या अधिक उचित रूप से, स्वयं के बारे में मन का अव्यक्त ज्ञान, समझ, अर्थात्, शाश्वत कारण और स्वयं की इच्छा या प्रेम के प्रकाश में स्वयं के बारे में उसकी समझ जिसके द्वारा आत्म-ज्ञान की यह प्रक्रिया गतिमान होती है, और ग. स्वयं ईश्वर को याद रखने, जानने और प्रेम करने वाला मन।

इनमें से प्रत्येक, अलग-अलग डिग्री में, तीन वास्तविक तत्वों को प्रकट करता है जो ऑगस्टीन के आध्यात्मिक व्यक्तित्व के अनुसार, समन्वित हैं और इसलिए समान हैं और साथ ही, अनिवार्य रूप से एक हैं। उनमें से प्रत्येक दिव्य व्यक्तियों के आपसी संबंधों पर प्रकाश डालता है। हालाँकि, यह तीन सादृश्यों में से अंतिम है, जिसे ऑगस्टीन सबसे संतोषजनक मानते हैं।

दूसरे में बताए गए तीन कारक तीन जीवन नहीं बल्कि एक जीवन हैं, तीन मन नहीं बल्कि एक मन हैं, और परिणामस्वरूप तीन पदार्थ नहीं बल्कि एक पदार्थ हैं। लेकिन उनका तर्क है कि यह केवल तभी संभव है जब मन अपनी सारी शक्तियों के साथ अपने निर्माता को याद करने, समझने और उससे प्रेम करने पर ध्यान केंद्रित करता है, तभी वह छवि जो वह उसके बारे में रखता है, जो पाप के कारण भ्रष्ट हो गई है, पूरी तरह से बहाल हो सकती है। इन समानताओं पर विस्तार से विचार करते हुए और उनके उदाहरणात्मक महत्व को बताते हुए, ऑगस्टीन को उनकी विशाल सीमाओं के बारे में कोई भ्रम नहीं है।

सबसे पहले, मनुष्य के मन में ईश्वर की छवि किसी भी मामले में एक दूरस्थ और अपूर्ण छवि है, वास्तव में एक समानता है, लेकिन एक बहुत दूर की छवि है। छवि सूर्य में एक चीज है, दर्पण में दूसरी। दूसरे, जबकि मनुष्य की तर्कसंगत प्रकृति ऊपर वर्णित त्रिमूर्ति को प्रदर्शित करती है, वे किसी भी तरह से उसके अस्तित्व के समान नहीं हैं जिस तरह से दिव्य त्रिमूर्ति ईश्वरत्व का सार बनाती है।

वाह! अगर आपको यह बात भ्रमित करने वाली लगती है, तो मानव जाति में आपका स्वागत है। गैर-प्रतिभाशाली श्रेणी में आपका स्वागत है। वाह! वे उन क्षमताओं या गुणों का प्रतिनिधित्व करते हैं जो मनुष्य के पास होती हैं, जबकि दिव्य प्रकृति पूरी तरह से सरल होती है।

यह विभाजन के अयोग्य है। तीसरा, इसके परिणामस्वरूप, जबकि स्मृति, समझ और इच्छा मानव मन में उसका सबसे बड़ा त्रित्ववादी प्रतिबिंब है, जबकि स्मृति, समझ और इच्छा अलग-अलग काम करती है, तीनों व्यक्ति परस्पर सह-अस्तित्व में हैं, और उनके कार्य एक और अविभाज्य हैं। अंत में, जबकि ईश्वरत्व में त्रिदेव के तीन सदस्य व्यक्ति हैं, वे मनुष्य के मन में ऐसे नहीं हैं।

त्रिमूर्ति की छवि एक व्यक्ति है, लेकिन सर्वोच्च त्रिमूर्ति स्वयं तीन व्यक्ति हैं, जो एक विरोधाभास है जब कोई यह सोचता है कि फिर भी, तीनों मन में त्रिमूर्ति की तुलना में अधिक अविभाज्य रूप से एक हैं। छवि और त्रिमूर्ति के बीच यह विसंगति हमें केवल इस तथ्य की याद दिलाती है कि प्रेरित ने हमें बताया है कि यहाँ पृथ्वी पर, हम, उद्घरण, एक दर्पण में अस्पष्ट रूप से देखते हैं। उसके बाद, और केवल उसके बाद, हम आमने-सामने देखेंगे।

वाह! ऑगस्टीन के उन सादृश्यों पर किए गए काम को उनकी सूझबूझ और रचनात्मकता के लिए धर्मशास्त्र के अलावा विभिन्न क्षेत्रों में बहुत सम्मान और अध्ययन मिला है। लेकिन अंत में, ऐसा लगता है कि कोई भी सादृश्य वास्तव में अच्छा काम नहीं करता। वह इसे स्वीकार करते हैं।

वह खुद भी इसे स्वीकार करते हैं। लेकिन यही उनकी सबसे बड़ी उपलब्धि थी। कॉन्स्टेंटिनोपल की परिषद ने प्रसिद्ध निकेनो -कॉन्स्टेंटिनोपोलिटन पंथ का निर्माण किया, जिसे अक्सर निकेने पंथ कहा जाता है।

325 के नाइसिन पंथ को 381 में कॉन्स्टेंटिनोपल में पॉलिश किया गया, पूरा किया गया। नाइसिनो -कॉन्स्टेंटिनोपोलिटन पंथ त्रिदेवों को समझने में पिता की प्रगति का सारांश प्रस्तुत करता है। यहाँ पंथ है।

मैं रॉबर्ट लेथम की द होली ट्रिनिटी पर लिखी गई अद्भुत पुस्तक में दिए गए अनुवाद को उद्धृत कर रहा हूँ। और बदले में उन्होंने 1988 में लिखी गई द सर्व फॉर द क्रिश्चियन डॉक्ट्रिन ऑफ गॉड, द एरियन कॉन्ट्रोवर्सि, 318-381 में आरपीसी हैनसन को श्रेय दिया है। यहाँ कॉन्स्टेंटिनोपल में फादर की परिषद के प्रकाश में, अपडेट किया गया, समाप्त किया गया निकेने पंथ है।

हम एक ईश्वर, सर्वशक्तिमान पिता, स्वर्ग और पृथ्वी और सभी दृश्यमान और अदृश्य चीजों के निर्माता, और एक प्रभु यीशु मसीह, ईश्वर के पुत्र, एकमात्र जन्मे, सभी युगों से पहले पिता से जन्मे, प्रकाश से प्रकाश, सच्चे ईश्वर से सच्चे ईश्वर, जन्मे, बनाए नहीं गए, पिता के साथ एकरूप, जिनके द्वारा सभी चीजें अस्तित्व में आईं, जो हमारे लिए मनुष्यों और हमारे उद्धार के लिए स्वर्ग से नीचे आए, स्वर्ग से, और पवित्र आत्मा और वर्जिन मैरी द्वारा अवतार लिया, और एक आदमी बन गए, और पोंटियस पिलातस के तहत हमारे लिए क्रूस पर चढ़ाए गए, और पीड़ित हुए, और दफन किए गए, और तीसरे दिन शास्त्रों के अनुसार फिर से उठे, और स्वर्ग में चढ़ गए, और पिता के दाहिने हाथ पर बैठे हैं, और जीवित और मृतकों का न्याय करने के लिए महिमा के साथ फिर से आएंगे, और उनके राज्य का कोई अंत नहीं होगा। और हम पवित्र आत्मा, प्रभु और जीवनदाता में विश्वास करते हैं, जो पिता से आता है, जिसकी पूजा पिता और पुत्र के साथ की जाती है और जिसकी महिमा की जाती है, जिसने भविष्यद्वक्ताओं द्वारा बात की थी, और एक पवित्र, कैथोलिक और प्रेरितिक चर्च में, हम पापों की क्षमा के लिए एक बपतिस्मा स्वीकार करते हैं। हम मृतकों के पुनरुत्थान और आने वाले युग के जीवन की प्रतीक्षा करते हैं।

आमीन। हम कुछ टिप्पणियों के साथ अपनी बात समाप्त करते हैं। परमेश्वर एक ही प्राणी है जो हमेशा से तीन व्यक्तियों के रूप में अस्तित्व में रहा है: पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा।

ईश्वर को विभाजित नहीं किया जा सकता, जो ईश्वरीय सरलता का एक पहलू है। इसलिए, प्रत्येक व्यक्ति पूरी तरह से ईश्वर है, और संपूर्ण ईश्वर प्रत्येक व्यक्ति में है। पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा एक ही ईश्वरीय सार के हैं।

वे एकरूप हैं। जब चर्च के पिता मूल की भाषा का उपयोग करते हैं, तो पिता पुत्र को जन्म देता है, जो एकमात्र जन्मा है। आत्मा पिता और पुत्र से निकलती है या भेजी जाती है।

वे यह नहीं सिखाते कि त्रिदेवों के व्यक्ति सृजित प्राणी हैं। इसके बजाय, यह भाषा व्यक्तियों के बीच शाश्वत संबंधों को संदर्भित करती है। ईश्वर हमेशा से पिता रहा है।

पुत्र हमेशा से ही पिता का पुत्र रहा है। आत्मा हमेशा से ही पिता और पुत्र से ही आई है। व्यक्तियों के बीच के रिश्ते शाश्वत हैं।

ईश्वर हमेशा से पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा रहा है। कोई दूसरा ईश्वर नहीं है। महत्वपूर्ण बात यह है कि पंथ पवित्र आत्मा पर चर्च की शिक्षा को स्पष्ट करता है।

यह आत्मा के व्यक्तित्व की शिक्षा देता है जब यह कहता है कि उसने भविष्यद्वक्ताओं के माध्यम से बात की। केवल एक व्यक्ति ही बोल सकता है, न कि कोई अवैयक्तिक शक्ति, और यही आत्मा ने किया है। पंथ पवित्र आत्मा के देवता होने की भी शिक्षा देता है।

सबसे पहले, यह उसे ईश्वरीय नाम, प्रभु, से पुकारता है। दूसरा, जब यह कहता है कि पवित्र आत्मा की पूजा की जाती है और पिता और पुत्र के साथ महिमा की जाती है, तो यह उसे केवल ईश्वर की पूजा के योग्य मानता है। तीसरा, यह आत्मा को सृष्टि और उद्धार के दिव्य कार्यों का श्रेय देता है।

जब यह कहा जाता है, वह जीवनदाता है, वह जो सृष्टि को भौतिक जीवन और मुक्ति में आध्यात्मिक जीवन देता है। हम ट्रिनिटी के अपने ऐतिहासिक धर्मशास्त्रीय सर्वेक्षण को फिर से सेंट ऑगस्टीन के साथ समाप्त करते हैं, जो प्रारंभिक चर्च के सबसे प्रमुख धर्मशास्त्री थे, जिन्होंने पश्चिमी ईसाई धर्म के विकास को आकार दिया। वह कन्फेशन, द सिटी ऑफ गॉड और ऑन द ट्रिनिटी के लिए सबसे ज्यादा जाने जाते हैं।

इनमें से आखिरी में, वह उपयोग और आनंद के बीच अंतर करता है। हमें परमेश्वर द्वारा दी गई चीजों का उपयोग या उपयोग करना चाहिए ताकि हम उसकी महिमा कर सकें। लेकिन आनंद केवल परमेश्वर से संबंधित है।

हमें उसे किसी दूसरे उद्देश्य के साधन के रूप में इस्तेमाल नहीं करना चाहिए, क्योंकि वह सर्वोच्च उद्देश्य है। इसके बजाय, हमें उसका आनंद लेना चाहिए और उससे प्रेम करके तथा उसकी सेवा करके, यहाँ तक कि अन्य अच्छी चीजों के उपयोग में भी, उसमें पूर्णता प्राप्त करनी

चाहिए। ऑगस्टीन का उद्घरण ऑन क्रिश्चियन डॉक्ट्रिन, डी डॉक्ट्रिना से, जो कि, वह धर्मांतरित होने से पहले बयानबाजी का शिक्षक था, और उसने इसके लिए पश्चाताप किया।

उन्होंने कहा कि उन्होंने अनैतिक वकीलों को लोगों को धोखा देने के लिए उपकरण दिए। लेकिन ऑन क्रिश्चियन डॉक्ट्रिन में, उन्होंने कैथोलिक छोटे सी, वर्ष 400 ईस्वी से पहले सार्वभौमिक चर्च के विश्वास को संक्षेप में प्रस्तुत किया, और इतना ही नहीं, उन्होंने हेर्मेनेयुटिक्स के बारे में बहुत मददगार तरीके से बात की, और फिर उन्होंने बयानबाजी के शिक्षक के रूप में अपने महान अनुभव का उपयोग करते हुए होमिलेटिक्स पर एक खंड भी दिया। यह एक आकर्षक छोटा सा काम है।

यहाँ ईसाई सिद्धांत पर से एक उद्घरण है। तो आनंद की सच्ची वस्तुएँ पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा हैं, जो एक ही समय में त्रिदेव हैं, जो सभी से ऊपर सर्वोच्च हैं और उन सभी के लिए समान हैं जो उनका आनंद लेते हैं। त्रिदेव, एक ईश्वर, जिनसे सभी चीजें हैं, जिनके द्वारा सभी चीजें हैं, जिनमें सभी चीजें हैं।

इस प्रकार, पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा, और इनमें से प्रत्येक अपने आप में ईश्वर है, और साथ ही, वे सभी एक ईश्वर हैं, और उनमें से प्रत्येक अपने आप में एक पूर्ण पदार्थ है, और फिर भी वे सभी एक पदार्थ हैं। पिता न तो पुत्र है और न ही पवित्र आत्मा। पुत्र न तो पिता है और न ही पवित्र आत्मा।

पवित्र आत्मा न तो पिता है, न ही पुत्र, बल्कि पिता केवल पिता है। पुत्र केवल पुत्र है, और पवित्र आत्मा केवल पवित्र आत्मा है। इन तीनों में एक ही शाश्वतता, एक ही अपरिवर्तनीयता, एक ही महिमा, एक ही शक्ति है, जिसके लिए हम केवल यही कह सकते हैं, आमीन।

हमारे पक्ष में कुछ प्रतिभाशाली लोगों का होना अच्छा है, है न? 1 कुरिन्थियों 1 में, पॉल कहते हैं, चर्च में अपने आस-पास देखें, वहाँ बहुत से अमीर लोग नहीं हैं, बहुत से वास्तव में बुद्धिमान लोग नहीं हैं। परमेश्वर ने खुद को महिमा देने के लिए इस दुनिया के भिखारी तत्वों को चुना, ताकि हम केवल प्रभु में महिमा कर सकें, न कि मानवीय शक्ति या धन या बुद्धि में, जैसा कि वह इस मामले में यिर्मयाह को उद्धृत करता है। बाइबल सिखाती है कि जीवित और सच्चा परमेश्वर त्रि-त्रिएक है।

जैसा कि हम इसका अर्थ समझते हैं, हम सात कथनों को खोलेंगे। पहला, एक ईश्वर है। दूसरा, पिता ईश्वर है।

तीसरा, पुत्र परमेश्वर है। चौथा, आत्मा परमेश्वर है। पाँचवाँ, पिता, पुत्र और आत्मा अविभाज्य हैं, लेकिन अलग-अलग हैं।

छह, पिता, पुत्र और आत्मा एक दूसरे में निवास करते हैं। सात, पिता, पुत्र और आत्मा एकता और समानता में विद्यमान हैं। हालाँकि शास्त्र हमें त्रिएकत्व का पूर्ण सिद्धांत नहीं देते हैं, लेकिन जब

आप उन सात कथनों को एक साथ रखते हैं, तो वाह, वे हमें उस दिशा में इंगित करते हैं, क्या हम कह सकते हैं।

नंबर एक, एक ईश्वर है। दोनों नियम एकेश्वरवाद को समान रूप से स्वीकार करते हैं, यह विश्वास कि केवल एक ईश्वर है। व्यवस्थाविवरण 6:4, और 5. मूसा ने लिखा, अब यह आज्ञा है, व्यवस्थाविवरण 6:1, जो विधियाँ और नियम तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने मुझे तुम्हें सिखाने की आज्ञा दी है, ताकि तुम उन्हें उस देश में मानो जिसे तुम अधिकार में लेने जा रहे हो, ताकि तुम और तुम्हारा बेटा और तुम्हारे पोते अपने परमेश्वर यहोवा का भय मानते हुए उसकी सारी विधियों और आज्ञाओं का पालन करो, जो मैं तुम्हें जीवन भर आज्ञा देता हूँ, और तुम बहुत दिन तक जीवित रहो।

इसलिए हे इस्राएल, सुनो और उनके अनुसार करने में चौकसी करो, कि तुम्हारा भला हो, और तुम बहुत अधिक परिश्रम न करो, जैसा कि तुम्हारे पूर्वजों के परमेश्वर यहोवा ने उस देश में कहा है, जो दूध और मधु की धाराएँ बहती हैं। व्यवस्थाविवरण 6, 4. हे इस्राएल, सुनो, यहोवा हमारा परमेश्वर है, यहोवा एक ही है। तुम अपने परमेश्वर यहोवा से अपने सारे मन, अपने सारे प्राण, और अपनी सारी शक्ति के साथ प्रेम रखना।

ये वचन जो मैं आज तुझ को आज्ञा देता हूँ वे तेरे मन में बने रहें। तू इन्हें अपने बाल-बच्चों को सिखाना, और घर में बैठे, मार्ग पर चलते, लेटते, उठते, इनकी चर्चा करना। और इन्हें अपने हाथ पर चिन्हानी के रूप में बान्धना।

रूढ़िवादी यहूदी धर्म इस श्लोक को शाब्दिक रूप से लेता है, और तुम, वे तुम्हारी आँखों के बीच में टीका के समान होंगे। तुम उन्हें अपने घर के दरवाजे की चौखट पर और अपने द्वारों पर लिखोगे। बेशक इसका अर्थ यह है कि शास्त्रों को न केवल कबूल किया जाना चाहिए, बल्कि बच्चों, नाती-नातिनों और अन्य लोगों के सामने जीना चाहिए।

व्यवस्थाविवरण 6:4 और 5 वास्तव में हमारा आधारभूत पाठ है। इस तरह के अंश त्रिएकत्व के नए नियम के सिद्धांत की नींव रखते हैं। हे इस्राएल, सुनो, हमारा परमेश्वर यहोवा, यहोवा एक है।

व्यवस्थाविवरण 6, हालाँकि यह अंश परमेश्वर की विशिष्टता पर ध्यान केंद्रित करता है, लेकिन यह उसकी एकता को भी दर्शाता है। प्रभु ने विपत्तियों और पलायन में मिस्र के तथाकथित देवताओं का सामना किया और उन्हें पराजित किया। अब मूसा के माध्यम से, वह इस्राएलियों से सार्वजनिक रूप से यह स्वीकार करने का आह्वान करता है कि वह, यानी परमेश्वर, उनका है।

इससे पहले मूसा ने व्यवस्थाविवरण 4:35 में परमेश्वर की अद्वितीयता की घोषणा की थी। तुम्हें यह इसलिए दिखाया गया कि तुम जान सको कि यहोवा ही परमेश्वर है। उसके अलावा कोई और नहीं है, व्यवस्थाविवरण 4:35।

प्राचीन निकट पूर्वी बहुदेववाद के बीच, प्राचीन निकट पूर्वी बहुदेववाद के बीच, मूसा ने शक्तिशाली रूप से ईश्वर की एकता को स्वीकार किया। कनानी लोगों के दावों के बावजूद, जो

बाल की पूजा करते हैं, मिस्र के लोग, जो अम्मोन-रे का सम्मान करते हैं और बेबीलोन के लोग, जो मर्दुक के प्रति समर्पित हैं, केवल इज़राइल का ईश्वर ही ईश्वर है। कोई दूसरा नहीं है।

इस्राएल केवल प्रभु में विश्वास का दावा करता है, व्यवस्थाविवरण 6:4 और 5। इस्राएल को न केवल एकेश्वरवाद का दावा करना चाहिए, बल्कि वास्तव में उस पर विश्वास करना चाहिए और उसका पालन करना चाहिए। "अपने प्रभु परमेश्वर से अपने पूरे मन, अपने पूरे प्राण और अपनी पूरी शक्ति से प्रेम करो।" पद 5. परमेश्वर के लोगों को उनसे अपने पूरे अस्तित्व और अपनी सारी संपत्ति से प्रेम करना चाहिए, और उन्हें परमेश्वर के वचनों को संजोना चाहिए और उन्हें अपने बच्चों को दैनिक जीवन में प्रदान करना चाहिए, पद 6 और 7. याकूब 2:14 से 26. लूथर को जेम्स के साथ कठिनाई थी, और उसकी टेबल टॉक में, जो हमारे पास पूरी तरह से विश्वसनीय रूप में नहीं आती है, उसे और कैटी को बिलों का भुगतान करने में मदद करने के लिए छात्रों को घर में ले जाना पड़ता था, और वे टेबल के चारों ओर इकट्ठा होते थे, और वह उनके सामने शेखी बघारता था।

वह शेखी बघारता था और कहानियाँ सुनाता था, और लोग उसके शब्दों को ज्ञान के मोती के रूप में लेते थे, और उसमें कुछ मोती थे, लेकिन जब उसने कहा कि कभी-कभी उसे जिमी को आग में फेंकने का मन करता है, तो वह ज्ञान के मोतियों में से नहीं था। सच में, उसने कभी भी जेम्स को कैनन से बाहर नहीं किया, लेकिन उसने इसे नए नियम के पीछे रखा क्योंकि इसमें मसीह के बारे में बहुत कम बात की गई थी, और यह उसका व्यापक धार्मिक सिद्धांत था, विशेष रूप से विश्वास द्वारा औचित्य यह एक धार्मिक सिद्धांत, एक नैतिक सिद्धांत, एक व्याख्यात्मक सिद्धांत, यहाँ तक कि एक विहित सिद्धांत था। जेम्स को बाहर नहीं किया गया था, लेकिन इसे अंत में रखा गया था।

केल्विन, जो लूथर को सुधार का प्रेरित मानते थे, ठीक है, और जेम्स 2 पर अपनी टिप्पणी में शायद ही कभी उनके खिलाफ बोलते थे, केल्विन कहते हैं, जबकि कुछ लोगों को इस अंश से परेशानी होती है, लूथर का नाम न लेते हुए, वे कहते हैं, मैं नहीं करता। अगर हम भाषा के इस्तेमाल पर ध्यान दें, तो असंगति को खोजना मुश्किल नहीं है। केल्विन बिल्कुल सही हैं।

वास्तव में, पौलुस कभी-कभी इन शब्दों का इस्तेमाल इसी तरह करता है, लेकिन आम तौर पर यह सच नहीं होता। इसलिए, जबकि आम तौर पर पौलुस के अनुसार, विश्वास का मतलब यीशु पर प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में दिल से भरोसा करना है, याकूब 2:14 से 26 में, पिस्टिस या विश्वास का मतलब विश्वास का अंगीकार करना है। अगर कोई व्यक्ति कहता है कि उसे विश्वास है और उसके पास कोई शब्द नहीं है, तो क्या वह विश्वास उसे बचा सकता है? नहीं, नहीं।

दुष्टात्माएँ, वे परमेश्वर की एकता को स्वीकार करते हैं, दुष्टात्माएँ शेमा कहती हैं, जिसकी शुरुआत व्यवस्थाविवरण 6:4 और 5, 6, 4 से होती है। यह सच्चा विश्वास नहीं है; यह एक पेशा है। और जबकि कभी-कभी पॉल में, विशेष रूप से परमेश्वर के साथ किसी के रिश्ते की शुरुआत से औचित्य को देखते हुए, काम भगवान के सामने रखे गए गंदे कपड़े हैं ताकि वह हमें स्वीकार कर सके। पॉल में ही नहीं, वह सिखाता है कि कभी-कभी काम भी होता है।

वास्तव में, इफिसियों 2:10 में, 8 और 9 के बाद, जो केवल विश्वास और केवल अनुग्रह पर जोर देता है, और टाइटस में, जो वही बात कहता है, केवल अनुग्रह, केवल विश्वास, कार्य, कार्य, कार्य सच्चे विश्वास के प्रमाण के रूप में महत्वपूर्ण हैं। जेम्स 2 में, कार्य वैधीकरण करने वाले कार्य हैं जो विश्वास के पेशे को प्रदर्शित करते हैं। यह एक अच्छी पंक्ति है, मुझे बिना काम के अपना विश्वास दिखाओ और मैं तुम्हें अपने विश्वास के पेशे की वैधता दिखाऊंगा।

मैं अपने कामों से तुम्हें अपना विश्वास दिखाऊंगा। अब्राहम की तरह, और यहूदियों के लिए अपमानजनक रूप से, राहाब ऐसे लोगों के उदाहरण हैं जो न केवल यहोवा में विश्वास का दावा करते हैं, राहाब, हाँ, बल्कि वे अपने जीवन का प्रदर्शन करते हैं, अपने विश्वास को मान्य करते हैं। यहाँ तक कि याकूब में औचित्य का प्रयोग अलग तरीके से किया गया है।

यह पुराने नियम के उपयोग के अनुरूप है, जो मुझे, एक प्रारंभिक यहूदी ईसाई लेखक और पत्र के रूप में समझ में आता है। जबकि पॉल के लिए, न्यायोचित आमतौर पर उद्धार की शुरुआत को देखता है, जेम्स इसे अंत में देखता है, और भगवान इसके लिए गारंटी देता है, पुष्टि करता है, वह अपने लोगों को न्यायोचित ठहराता है जो विश्वास के माध्यम से अनुग्रह से बचाए गए हैं लेकिन जिन्होंने इसे अपने वैध कर्मों से प्रदर्शित किया है। किसी भी मामले में, जेम्स यहूदी ईसाइयों को लिखता है जो महसूस करते हैं कि ईश्वर की एकता यहूदी धर्म का एक मूल सिद्धांत है।

याकूब की पुस्तक इस बात पर जोर देती है कि ईश्वर एक है, लेकिन यह भी बताती है कि इस महत्वपूर्ण सत्य को स्वीकार करना ही पर्याप्त नहीं है। यह आवश्यक है, यह एक आवश्यक लेकिन अपर्याप्त शर्त है। याकूब ने लिखा है कि दुष्टात्माएँ भी जानती हैं कि केवल एक ही ईश्वर है, और वे उद्धार के लिए यीशु पर भरोसा नहीं करते।

फिर भी, अपने संदर्भ में वह अंश पुराने नियम के साथ सामंजस्य में एक नया नियम स्वीकारोक्ति है कि ईश्वर एक है। जैसा कि हमने अपने ऐतिहासिक धर्मशास्त्र का अन्वेषण किया, हमने देखा कि चर्च हमेशा, प्रारंभिक बिंदु ईश्वर की एकता थी। त्रिदेववाद कोई विकल्प नहीं था।

यह असंभव था। कठिनाई यह थी कि यीशु और यहां तक कि आत्मा की पूजा को परमेश्वर की एकता की स्वीकारोक्ति के साथ सामंजस्य बिठाना था। यह असंभव नहीं था; चर्च यह कहने के लिए प्रलोभित नहीं था कि, ठीक है, तीन ईश्वर या दो या तीन ईश्वर होने चाहिए।

नहीं, असंभव है। विराम लेने से पहले एक और अंश। 1 तीमुथियुस 2:5, और 6 में पौलुस पुष्टि करता है, परमेश्वर एक है और परमेश्वर और मनुष्य के बीच एक ही मध्यस्थ है, अर्थात् मसीह यीशु जो मनुष्य है, जिसने अपने आप को सब के छुड़ौती के रूप में दे दिया।

1 तीमुथियुस 2, 5, और 6. पौलुस पुराने नियम की शिक्षा के साथ मिलकर परमेश्वर की एकता की घोषणा करता है। व्यवस्थाविवरण 4:35, व्यवस्थाविवरण 6:4, जैसा कि हमने देखा। फिर वह इसमें कुछ और जोड़ता है, यीशु को परमेश्वर और लोगों के बीच एकमात्र मध्यस्थ के रूप में प्रस्तुत करता है।

जीवित और सच्चा परमेश्वर अपने पुत्र में खुद को प्रकट करता है, जो सभी विश्वासियों को बचाता है। उसने खुद को सभी के लिए छुड़ौती के रूप में दे दिया। परमेश्वर की एकता की पुष्टि करते हुए, चर्च का मानना है कि ईश्वरत्व में तीन व्यक्ति हैं, पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा।

मोडलिज्म के खिलाफ, चर्च सिखाता है कि ये सिर्फ उसके अस्तित्व की तीन अभिव्यक्तियाँ नहीं हैं, बल्कि पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा एक साथ ईश्वर हैं, क्रमिक रूप से नहीं। क्या हम तीन मोड के बारे में बात कर सकते हैं? हाँ, लेकिन तीन मोड ईश्वर का निर्माण करते हैं। वे केवल ईश्वर को प्रकट नहीं करते हैं।

मुझे याद है कि मैंने उनकी वेबसाइट पर एक चर्च के सिद्धांत संबंधी कथन पढ़ा था, और उसमें कहा गया था, ईश्वर पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के रूप में मौजूद हैं जो ईश्वर को प्रकट करते हैं। मुझे नहीं लगता कि वे मोडलिस्टिक थे। लेकिन यह एक मोडलिस्टिक कथन है।

ऐसा हो सकता है। उन्हें कहना चाहिए था, ईश्वर कौन हैं और ईश्वर को कौन प्रकट करता है, कुछ ऐसा। इसलिए, हमने शास्त्रों से अनंत काल के सिद्धांत का निर्माण करने के लिए अपने सात कथनों में से पहले कथन पर विचार किया है।

परमेश्वर एक है। अगली बार हम देखेंगे कि पिता ही परमेश्वर है, पुत्र ही आत्मा है।

यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन और धर्मशास्त्र उचित या ईश्वर पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 5 है, ट्रिनिटी, ऑगस्टीन और कॉन्स्टेंटिनोपल की परिषद। ईश्वर एक है।